Item Code: 952 Participant Code: 109

कब तक इंतज़ार करूँ...?

आज फिरसे माँ की वही भाषण देनेवाली डाँट सुनने को मिली। "पढ़कर कुछ नहीं होनेवाला, इसलिए तू पढ़ना छोड़कर किसी के यहाँ काम करने जा। काम से कम इससे तुम काम तो सीख लोगे। किताबों में लिखे जानेवाले अक्षरों से तुम्हारे पेट नहीं भरते। पेट भरने के लिए पसीना बहाकर खड़ी धूप में कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ता है। कुछ समझे छोटू?" माँ की यह बात हमेशा मुझे बुरा लगता है। अब माँ को कौन समझाए कि किताबों से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से जीवन में कुछ कर दिखाने का मौका। खैर, कोई नहीं माँ भी तो सिर्फ दूसरी कक्षा तक गई है न? इसलिए माँ इन बातों में यकीन नहीं करती। उनकी भी कोई गलती नहीं है। पता नहीं क्यों भगवान ने हमें गरीब बनाया। इसी गरीबी के कारण जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं मिलता। मगर मैं पढ़कर बड़ा आदमी बनूँगा और माँ को दिखाऊँगा कि "जो पढ़ेगा वही आगे

बढ़ेगा। जीवन में यदि सफलता प्राप्त करना है तो पढ़ाई एक

अगले दिन मैं रोज़ की तरह अपने किताबें हाथों में पकड़कर स्कूल की ओर जा रहा था। रास्ते में मेरा दोस्त गोलू मिल गया। हम दोनों साथ में चल रहे थे। अचानक मेरी नज़र गोलू के हाथ रहनेवाली उस किताब की ओर पड़ी। वह किताब नहीं एक महान ग्रन्थ है, जिसका नाम भगवद्गीता है। इस ग्रन्थ में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को गीता द्वारा उपदेश देते है। इसलिए स्वयं भगवान के गीत [उपदेश] इस ग्रन्थ में होने के कारण। इस ग्रन्थ का नाम भगवद्गीता पड़ गया। ऐसा मैंने रेडियो में सुना है। और मैंने यह सुना है कि इस ग्रन्थ को जो कोई भी ~~श्रद्ध~~ श्रद्धा, भक्ति से जो पढ़ता है, उसको साक्षात भगवान श्री कृष्ण जी की अशीर्वाद मिलता है। और ज्ञान भी। मैंने गोलू से इसके बारे में पूछा तो उसको यह ग्रन्थ उसके

पिताजी जब शहर यहाँ अपने गाँव आने वक्त लाए थे। उसने यह ग्रन्थ सिर्फ उसी दूकान में मिलता है। मुझे भी चाहिए यह ग्रन्थ। मगर उसका मुल्य एक सौ पचास रूपया है। जो मेरी उम्मीद की बहार थी। मगर मैं स्कूल के बाद जब घर लौटा तब माँ उधर बर्तन धो रही थी। मैंने माँ से बोला मुझे भगवद्गीता चाहिए। मगर उतने पैसे मैं कहाँ से लाऊँ। माँ बहुत गुस्सा हो गई। मैं उदास होकर घर के आँगन में बैठकर सोचने लगा। "एक सौ पचास रूपया... अगर स्कूल के बाद बस स्टेन्ड पर यात्रीयों की बैग वगैरा उठालूँगा तो वे मुझे दस देंगे। अगर मैं वीर साहब की ढाबे पर चायवाला बनूँगा तो वे मुझे दिन दस रूपया या बीस रूपया देंगे। इस प्रकार मैं स्कूल के बाद दोनों जगह काम करूँगा तो मुझे ज्यादा पैसा मिलेंगे। हाँ... मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन मैं स्कूल में मेरे दोस्त गोलू से मिला उसके पिताजी एक हफ्ते बाद फिरसे किसी काम के सिलसिले में शहर जानेवाले हैं। मैंने गोलू यह बात पक्की कर ली है कि इस में भगवद्गीता पैसा इक्कट्ठा करके उसके पिताजी के हाथों में दूँगा भगवद्गीता खरीदने के लिए। गोलू ने भी अपने पिताजी से बात करके उन्हें भगवद्गीता खरीदने के लिए मना लिया है। वे रविवार शाम चार बजे की बस पकड़नेवाले हैं। रविवार के लिए अभी भी छह दिन बचे हैं। उतने में पैसों के इंतज़ाम हो जाएँगे। इसी खुशी में मैं घर लौटा। स्कूल की किताबें अंदर रखकर मैं चला काम करने बस स्टेन्ड और वीर साहब की ढाबे की ओर। बस स्टेन्ड में दस रुपया और वीर साहब की ढाबे में भी सिर्फ दस रुपया ही मिले। इसी प्रकार रोज़ चलता रहा।

Item Code: 952 Participant Code: 109

आखिर वह दिन आ ही गया। मेरे पास कुल मिलाकर एक सौ बीस रुपए थे। माँ अपनी वेतन से तीस रुपए दिए मेरे लिए। माँ पहली बार मेरी चाहत के लिए सहायता कर रही हैं। उन्होंने कहा कि "बेटा छोटू, बहुत श्रद्धा इस ग्रन्थ के लिए तुम काम कर रहे हो। तुने मुझसे पैसे नहीं माँगी। अपनी मेहनत पैसे कट्टा कर रहे हो। तुम्हारी मेहनत देखकर मैं खुश हूँ। अब जाओ वरना देर हो जाएगी। राजनाथ जी निकल जाएँगे। मैं मुँह से खुशी के मारे कोई शब्द नहीं निकल रही। मैं माँ को किस प्रकार से धन्यवाद कहूँ।

मैं तेज़ भागने लगा बस स्टेन्ड की ओर। इस खुशी में की मेरी ज्ञान प्राप्ति का जो सपना था वह सच होनेवाला है। मैं बस स्टेन्ड की ओर गया मगर वहाँ पर सिर्फ गोलू था। गोलू के पिताजी कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। मैं गोलू से

उसके पिताजी के बारे में पुछा तो उसने बोला कि पिताजी अभी अभी बस पकड़कर निकल गए। यह सुनकर मेरी पाँव से ज़मीन फिसल गई। मेरी ज्ञान प्राप्त करने का सपना चूर चूर हो गया। मुझे जो दिल पर लगा न, वह मैं कभी नहीं भूल सकता। मैं गोलू के साथ तोड़ी देर वाग्वाद किया की। तुमने अपने पिताजी को क्यों नहीं रोका। मगर वह मजबूर था। उसके पिताजी उसकी तोडी न सुनेंगे। ऐसा उसने बोला। "मेरे लिए तोड़ी देर और इंतज़ार करवाता न अपने पिताजी से?" इस बार उसने कुछ नहीं बोला। उसकी खामोशी ही मेरी सवाल की जवाब दे रही थी।

मैं रोते-रोते घर लौटा। माँ ने मुझे सान्त्वाना दी की "भगवान दिल बसता। तुम्हारे किए हर कर्म [कार्य] में बसता है। तुम्हारे अच्छाईयों में बसता है।

अगर तुम अच्छे इंसान बनकर सच्चे रास्ते में चलते हो तो वह स्वयं तुझमें बसता। भगवान तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी सदैव रक्षा करता है। तुम इतनी छोटी-सी बात के लिए रो मत।"

"मैं और कब तक इंतज़ार करूँ माँ... कब तक?" ज्ञान प्राप्त करने के लिए....?

Cancel

Item Code: 952 Participant Code: 109

कब तक इंतज़ार करूँ...

आज फिरसे माँ की वही भाषन देनेवाली डाँट सुनने को मिली।" पढ़कर कुछ नहीं होनेवाला, इसलिए पढ़ना छोड़कर किसी के काम करने जा, कम से कम इससे ~~तुम्हारे~~ तुम काम तो सीख लोगे। किताबों में ~~होनेवाले~~ लिखे जानेवाले अक्षरों से तुम्हारे पेट नहीं भरते। पेट भरने के लिए पसीना बहाकर धूप में कमरतोड़ मेहनत करना पड़ता है। कुछ समझे छोटू ?" माँ की यह बात हमेशा मुझे बुरा लगता। माँ को कौन समझाए की किताबों ज्ञान प्राप्ति होता है और ज्ञान से जीवन में कुछ कर दिखाने का मौका। खैर, कोई नहीं माँ भी तो सिर्फ दूसरी कक्षा तक गई है न ? इसलिए माँ इन बातों में यकीन नहीं करती। उनकी भी कोई गलती नहीं है। पता नहीं क्यों भगवान ने हमें गरीब बनाया। इसी गरीबी के कारण जो चाहता हूँ वह नहीं मिलता।

Cancel

बढ़ेगा। ~~जीवन में अगर सफलता प्राप्त करना है तो पढ़ाई एक मार्ग है।~~

~~अगले दिन मैं रोज़ की तरह अपने किताबें हाथों में पकड़कर स्कूल की ओर जा रहा था। रास्ते में मेरा दोस्त गोलू मिल गया। हम दोनों साथ में चल रहे थे। गोलू के हाथ में एक किताब दिखा जिसका नाम था "रामायण"। यह बहुत पवित्र और ज्ञान प्राप्त करने उपयुक्त किताब है। ऐसा मैंने रेडियो पर सुना था। मगर इसका मुल्य हमारे उम्मीद से बाहर है। मैंने गोलू से पूछा उसके पिताजी ने शहर लाया था यह किताब। उसका मुल्य एक सौ पन्चास रुपए~~